तेलुगु "पदकविता पितामह" ताल्लपाक अन्नमाचार्य के श्रृंगार संकीर्तन

डॉ. सुमनलता
हैदराबाद
9849415728

शोधसारः करीब–करीब डैढ़ सौ वर्षों तक ताल्लपाक के कवि तेलुगु सरस्वती के गले में साहित्यक आभूषण तथा हार पहनाते रहे। ताल्लपाक के कवियों ने तेलुगु भाषा को राज भवनों के बाहर निकाल कर सामान्य जनता के अनुकूल बनाया था। (जिसे हम "जानुतेनुगु" कहते हैं) उस युग में उनके साहित्य के कारण जो स्फूर्ति तथा चेतना तेलुगु भाषा तथा साहित्य को प्राप्त हुई थी, वह अन्य किसी युग या कवियों के कारण प्राप्त नहीं हुई। उन्हें मालूम था कि धर्म के प्रचार तथा प्रसार के लिए साहित्य ही मूलाधार है। अतः उन्होंने भाषा को साधन बनाकर नित्य नये प्रयोगों के साथ धर्म को प्रजा के सम्मुख रखा। इस प्रकार वैष्णव धर्म तथा साहित्य–दोनों की उन्नति में कवि सहायक बन सके। इनके साहित्य को एक विशाल मंदिर से तुलना कर सकते हैं।

बीज शब्दः संकीर्तन, संकीर्तन भंडार, श्रृंगार, वेंकटेश्वर, विरह, नायक – नायिका

प्रस्तावनाः

अध्ययन से पता चलता है कि तेलुगु साहित्य का आरम्भ, कवित्रय (नन्नया, तिक्कना, और एर्रा प्रगड़ा) का धार्मिक ग्रंथ "आंध्र महाभारत" से हुआ था। अध्ययन से यह भी स्पष्ट है कि तेलुगु साहित्य के आरम्भिक काल में आंध्रप्रदेश पर शैव तथा वैष्णव धर्मो का प्रभाव अधिक मात्रा में था। अतः दोनों धर्मावलम्बी अपने धर्म के प्रचार के लिए "जानुतेनुगु" (अर्थात् बोलचाल की भाषा) को अपनाकर उसमें नये–नये प्रयोग करते रहे। फलस्वरूप आरम्भिक काल से ही तेलुगु भाषा में उत्तम ग्रंथों का निर्माण हुआ। अपने धर्म के प्रचार तथा प्रसार के लिए दोनों धर्मावलम्बियों ने साहित्य के साथ–साथ संगीत का भी सहारा लिया।

'तेलुगु पदकविता पितामह' ताल्लपाक अन्नमाचार्य, एवं परिवार

तेलुगु भाषा के साहित्याकाश में अत्यन्त प्रकाश के साथ चमकने वाले तारे हैं –ताल्लपाक के कवि अन्नमाचार्य, उनकी पत्नी, पुत्र, पौत्र तथा प्रपौत्र। इन कवियों की तुलना हम अरून्धती नक्षत्र सहित सप्तर्षि मंडल से कर सकते हैं। वैष्णव भक्ति साहित्य में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण तेलुगु साहित्य में इन कवियों का मूर्धन्य स्थान है। इनकी इस महानता का कारण यह है कि प्रायः एक ही परिवार के व्यक्ति, स्त्री तथा पुरुष ने मिलकर भाषा, साहित्य तथा संगीत का ही नहीं वरन् विशिष्टाद्वैत भक्ति तथा तिरुपति क्षेत्र की जो सेवा की थी, वह अन्यत्र देखने में दुर्लभ है। तिरुपति क्षेत्र में स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी के नाम से संसार के कोने–कोने के लोग परिचित हैं। अत्यन्त मधुर तथा सरल भाषा को माध्यम बनाकर देशी रीतियों में संगीत तथा साहित्य को अपना साधन बनाते हुए ताल्लपाक के कवियों ने स्वामी बालाजी पर विभिन्न रचनायें की। "एक ओर तिरुपति क्षेत्र के भगवान् बालाजी के अनुग्रह के कारण ताल्लपाक के कवियों ने नाम तथा यश कमाया था तो दूसरी ओर ताल्लपाक के कवियों की रचनाओं के कारण ही वेंकटेश्वर स्वामी की प्रशंसा कोने–कोने में फैल गयी। अतः दोनों का यश अन्योन्याश्रित है।"(ताल्लपाक कवुलु कृतुलु–विविध साहिती प्रक्रियलु–वे– आनंदमूर्ति, पुष्ठ54)

उनकी अधिकांश रचनाएँ मुक्तक तथा गेय पद शैलियों में ही लिखी गयी हैं।

संकीर्तनः

संकीर्तन शब्द की व्युत्पत्ति 'सम्यक कीर्तनम्' से हुई है। कीर्तन का अर्थ है– किसी की विशेषताओं का गुणगान करना अथवा वर्णन करना। "अगोचर दिव्य शक्ति, अर्थात् भगवान के गुणों का गान करना कीर्तन कहलाता है जिसमे भक्त हृदय को भगवान के पाद पद्मों तक ले जाने की अपूर्व क्षमता होती है।" कीर्तन का सम्बन्ध अपने इष्ट के नाम गुण, रूप और लीला से है। जो गाया जाता है, उसे गेय या पद या गीत कहते हैं। अमरकोष के अनुसार पदों में भक्त के हृदय को भगवान के पास ले जाने की अपूर्व शक्ति है। प्राचीन काल में पद तथा संकीर्तन पर्यायवाची शब्द थे।

संकीर्तनों की यह परम्परा संस्कृत से आते हुए सभी भारतीय भाषाओं में अत्यन्त लोकप्रिय बन गयी। जयदेव तथा लीला शुक के कृष्ण कर्णामृत के पद आज भी बड़े चाव से गाये जाते हैं। उनका अभिनय भी किया जाता है। यद्यपि तेलुगु में पाल्कुरिकि सोमनाथ जैसे वीरशैव कवियों के द्वारा संकीर्तन रचना करने का उल्लेख मिलता है, किन्तु उनकी रचनाएँ आज उपलब्ध नहीं हैं। सोमनाथ के तुम्मेद पद, प्रभात पद, आनन्द पद, निवालिपद तथा वेन्नलपद आदि लोक साहित्य में अत्यन्त प्रसिद्ध है। नरसिंह के भक्त कवि

कृष्णमाचार्य तेलुगु के प्रथम वचन गीतकार थे। मधुर भक्ति के क्षेत्र में ये आलावारों से प्रभावित थे। इनकी प्रशंसा स्वयं ताल्लपाक के कवियों ने की है। इनसे ही प्रभावित होकर अन्नमाचार्य ने लोक शैलियों को अपनाया।

प्राचीनकाल में पद का अर्थ संगीत तथा साहित्य के सम्मेलन से उत्पन्न रचनाओं से था। "लक्षणकारों ने इसके वाक्" को साहित्य, तथा "गेय" को संगीत की संज्ञा दी है। इस प्रकार के संगीत तथा साहित्य अर्थात् वाक्य और गेय–दोनों को मिला कर रचना करने की क्षमता जिनमें होती थी, उन्हें "वाग्गेयकार" कहते थे। अन्नमाचार्य, पेदतिरुमलाचार्य तथा चिनतिरुमलाचार्य – ये तीनों महान् वाग्गेयकार थे। इन तीनों ने हजारों की संख्या में संकीर्तन लिखे। ताल्लपाक के कवियों को ही तेलुगु के सर्वप्रथम वाग्गेयकार होने का श्रेय प्राप्त है। ताल्लपाक के कवियों ने संकीर्तनों की रचना से ही संतुष्ट न हो कर उनके लक्षण भी स्पष्ट किये। उनकी इस अपूर्व क्षमता के ही कारण इस वंश के मूल पुरुष अन्नमाचार्य को "पदाकविता पितामह" की उपाधि प्राप्त हुई।

संकीर्तन भंडारः उनकी संकीर्तन सेवा के संदर्भ में ही विशेष उल्लेखनीय विषय यह है कि उन्होंने अपनी समस्त रचनाओं को संकीर्तन भंडार में सुरक्षित रखा। प्रायः अन्नमाचार्य स्वयं अपनी रचनाओं को ताल पत्रों पर लिखा करते थे और उन्हें सुरक्षित रखते थे।

उनका एक संकीर्तन इस प्रकार है कि – हे भगवान! तुम्हारे पाद पद्मों की ये संकीर्तन रूपी पुष्पों से पूजा कर रहा हूँ। केवल एक ही संकीर्तन हमारा उद्धार करने के लिए अधिक है। बाकी उसी संकीर्तन भंडार में ही पड़े रहने दो।"

बाद में उनके पुत्र पेद तिरुमलाचार्य ने इन संकीर्तनों को 'ताम्र पत्रों' पर लिखवाया था। कभी–कभी वैष्णव धर्म के प्रचार के लिए दूर–दूर श्रीरंगम्, अहोबिलम् आद वैष्णव क्षेत्रों तक भेजने के लिए किसी किसी संकीर्तन् की दो–दो, तीन–तीन प्रतियाँ भी लिखवायी गयी थी। आज भी तिरुपति क्षेत्र के मंदिर की चहार दीवारी में ताल्लपाक कवियों की एक अलमारी है। उसके दोनों ओर अन्नमय्या तथा पेद तिरुमलाचार्य की मूर्तियाँ हैं। उस अलमारी में ताल्लपाक कवियों की सभी रचनाओं के ताम्रपत्र रखे हुए हैं। साथ–साथ मंदिर की दीवारों पर स्वर सहित लिखवाया था।

अन्नमाचार्य प्रकांड पंडित थे। वे संस्कृत व देशी तेलुगु दोनों में संकीर्तन लिखने में कुशल थे। इनके संकीर्तन अध्यात्म और श्रृंगार नामक दो प्रकार के हैं। अन्नमाचार्य के पौत्र चिन्नन्ना के अनुसार

अन्नमाचार्य ने पहले श्रृंगार एवं पश्चात् अध्यात्म संकीर्तनों की रचना की थी। संकीर्तनों को विषय–वस्तु के अनुसार, गाने की विधि के अनुसार एवं भाषा के अनुसार वर्गीकरण कर सकते है।

प्रत्येक पद में पल्लवि (टेक) और अनुपल्लवि दोनों प्राप्त होते हैं। उनके संकीर्तनों में जैसा कि ऊपर के वर्गीकरण में दिया गया है, लोकगीतों की सभी शैलियाँ मिलती हैं।

प्रस्तुत लेख में अन्नमाचार्य के श्रृंगार संकीर्तनों पर विहंगम दृष्टि डाली गयी है।

अन्नमाचार्य के प्राप्त संकीर्तनों में अधिकांश श्रृंगार संकीर्तन ही हैं। (लगभग पन्द्रह हजार प्राप्त हुए जिनमें से तेरह हजार श्रुंगार संकीर्तन है।) इन संकीर्तनों में श्रृंगार के सभी अंगों का सूक्ष्म वर्णन, जैसे– संयोग और वियोग, नायक, नायिका उनके हवा–भाव आदि का हुआ है।

इनके श्रृंगार संकीर्तनों के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए श्री गौरिपेद्दि रामसुब्ब शर्माजी कहते हैं – "गुरुओं से सीखे दार्शनिक विचार, आल्वारों की कथायें, नारद और शांडिल्य आदि भक्ति सूत्रों में चर्चित गोपिकाओं की भक्ति, अन्नमाचार्य के सामने आदर्श थे। इनके साथ–साथ भगवत और विष्णु पुराण के आधार पर कहीं–कहीं कवि ने अनपढों का भी श्रृंगार वर्णन किया है, जो भाव आल्वारों में नहीं गोचर होते हैं।" वेंकटेश्वर दक्षिण नायक हैं। वे तो श्रृंगार के नव–सावयव–साकार रूप हैं। उनके दक्षिण नायकत्व का वर्णन कवि नायिका से इस प्रकार कहलवा रहे हैं – "मैं तो तुम्हारे गुणों को अच्छी तरह जानती हूँ। थोड़ी सी छूट दे दी तो तुम लता के समान फैल जाते हो। गोपिकाओं से विवाह किया, अन्य कई कामिनियों से मिलन होकर अब मुझसे विवाह किया है।" नायक के विरह का भी वर्णन स्थान–स्थान पर हुआ है। नायक सखियों से कहता है कि मुझे तुम्हारे उपचारों की आवश्यकता नहीं, मेरी प्रियतमा से मिलन चाहिए। अतः तुम उससे मुझे मिलाओ। कवि स्वयं नायिका या सखी या दूती बन जाता है। आदि दम्पति अलमेलमंगा और वेंकटेश्वर का श्रृंगार संसार के आदर्श ही नहीं, वरन् जगत् कल्याणकारी भी है। इनका विरह जीवात्मा और परमात्मा का विरह है। यद्यपि सम्पूर्ण पद में विरह का वर्णन होने पर भी अन्नमाचार्य अन्त में वेंकटेश्वर की मुद्रा के साथ नायिका–नायक का मिलन करवाना उनकी अपनी विशेषता है। इन संकीर्तनों में विभिन्न प्रकार की नायिकायें – स्वकीया, दिव्या, मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा, धीरा, आदि के साथ–साथ वासकसज्जा, अभिसारिका, कलहांतरिता, खंडिता आदि अष्टविधि नायिकाओं का विस्तृत चित्रण है। इतना ही नहीं पद्मिनी, शंखिणी, हस्तिनी और चित्रिणी जाति की नायिकाओं का भी वर्णन इन्होंने किया है। जैसे एक ही पद में चारों का वर्णन–

(सभी जातियों की नायिका वही लग रही है।)

अन्नमाचार्य के श्रृंगार संकीर्तनों के नायक श्री वेंकटेश्वर होने पर भी उन्होंने श्री कृष्ण से अभिन्न ही माना गया है। अन्नमाचार्य की नायिका सहज सुन्दरी और सुकुमारी है। वह अपने अंग प्रत्यंग रूपी फूलों से ही अपने पति वेंकटेश्वर की पूजा करती है –

नायिका के वीक्षण मात्र से कमल दलों से पूजा हो जाती है। मंद मुसकान से ही कुंद कुसुमों की अर्चा होती है। उंसास छोड़ने से चम्पा पुष्पों से पूजा।

इस दिव्य सौन्दर्य की मूर्ति नायिका को सौन्दर्य के प्रसाधनों की आवश्यकता ही नहीं है, क्योंकि उसका मुख ही दर्पण है जिसमें वेंकटेश्वर अपने आपको देख सकते हैं। वह स्वयं लक्ष्मी है इस कारण आभूषणों की भी आवश्यकता नहीं है। मुस्कुराने से मोती और रूठ जाने पर माणिक्य बिखरते हैं। इस नायिका को पाकर वेंकटेश्वर स्वयं ''लखपति'' बन गये हैं। एक अन्य स्थान पर कवि सखियों के द्वारा लक्ष्मी के सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार से करवा रहे हैं–

"चूडरम्मा चेलुलार सुदति चक्कदनालु"

अर्थात् नायिका का जन्म क्षीरसागर में होने के कारण उसका मुख चन्द्रमा के समान होने में कोई आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि चन्द्रमा स्वयं उसका भाई है। मन्दहास अमृत जैसा है क्योंकि अमृत उसके मायके का धन है। इसके गुण क्षीर सागर के ही समान हैं। इसके पांव कल्पतरु के किसिलय के समान होना भी कोई विशेष बात नहीं क्योंकि वह कल्पतरु भी उसके आंगन का ही है।

कुछ संकीर्तनों में नायक और नायिका के ''काम यज्ञ'' का वैदिक होम प्रक्रिया के अनुसार विस्तार पूर्वक वर्णन है – नायिका यज्ञ कर रही है – अपने प्यार को देवताओं की प्रीति के लिए अर्पित कर रही है। पान खाने से जो रस निकलता है वही सोमपान है। सुन्दर कंठ ध्वनि ही वेद मंत्र हैं। विरहाग्नि ही होमाग्नि है। पसीना ही व्रत के समय करने वाला स्नान है। श्री वेंकटेश्वर के साथ मिलन ही दिव्य भोग है। इसी प्रकार का वर्णन नायक के प्रति भी है। कई संकीर्तन नायक और नायिका के दिव्य सौन्दर्य से भरे प्राप्त होते हैं।

"अतिव जव्वनमु रायलकु बेट्टिनकोट
पति मदन सुख राज्य भारंबु निलुपु।"

इस पद में कवि कहते हैं कि – नायिका का सौन्दर्य सहज दुर्ग है, उसमें नायक वेंकटेश्वर अपने मदन–साम्राज्य का भार सुख से संभालते हैं। नायिका की दृष्टि मेघ–मध्यगत तड़ित रेखा सी है, जो नायक के दिल का अंधेरा दूर करती है। उसका मुख चन्द्रमा ही है और इसीलिए नायक के नैन–कुमुद नित्य

प्रफुल्लित रहते हैं। नायक को एकान्त स्थान ढूँढ़ने का कष्ट है ही नहीं, क्योंकि नायिका का केश कलाप खुद अंधेरा फैलाता है। नायिका की बाहु लताएँ प्रभु वेंकटपति की प्रणयलता से लिपट कर विहार कुंज का स्वयं संपादन करती हैं।

अन्नमाचार्य के कोमल भावों का सुन्दर उदाहरण देखिए–

"कुलुकुचु नडवरोयम्मलाला" इस संकीर्तन में कवि ने नववधु अलमेल मंगा की पालकी को कहार पुरुषों के नहीं कोमलियों के हाथ दिया है। हँसी मजाक में जब वे तेजी से चलने लगीं तो वधु कांपने लगी। वधु के फूल बिखरने लगे। यह कवि से देखा न गया। अतः उन कहारों से अनुरोध करते हैं कि अरे! धीरे–धीरे चलो। देखो उसके मांग का चन्दन सारे शरीर पर बिखर गया है, कंकणों के हिलने के कारण उसके कोमल हाथ लाल हो गये हैं। एक स्थान पर कवि रूठी नायिका से प्रेम आरोगने के लिए मिन्नतें कर रहे हैं क्योंकि नायिका के चित्त को भूख लगी है।

निष्कर्षः

अन्त में श्री राल्लपल्लि अनंतकृष्ण शर्मा जी से हम भी सहमत हैं "अन्नमाचार्य के संकीर्तन सारस्वत क्षीर सागर है। भक्ति और श्रृंगार में स्वतंत्र सन्निवेश, भाव ही नहीं स्वच्छ देशी और ग्रंथिक भाषाओं के सम्मिश्रण से रसिक और सहृदयों को आनन्द पहुँचाते हैं।"

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. आर. सुमनलता, अष्टछाप तथा ताल्लपाक के कवियों का तुलनात्मक अध्ययन, दक्षिणांचलीय साहित्य समिति, हैदराबाद– 1989

2. डॉ. वेटूरि आनंदमूर्ति, ताल्लपाक कवुल कृतुलु, विविध साहिती प्रक्रियलु (तेलुगु), श्रीनिवास विजयनगर कालोनी, हैदराबाद– 1974

3. डॉ. एम. संगमेशम, अन्नमाचार्या और सूरदास का संस्कृतिक अध्ययन, ति.ति.दे. 1983

4. ताल्लपाक साहित्यमु आध्याम, श्रृंगार संकीर्तनमु (विभिन्न संकलन), ति.ति.दे. प्रकाशन 1980–81

5. पुट्टपर्ति नारायणाचार्युलु, तेलुगुलो पदकवितलु, आंध्र सारस्वत परिषद, हैदराबाद– 1973